ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सांस्कृतिक गतिविधियों एवं खेलकूद की अनिवार्यता पर एक अध्ययन

डॉ. प्रियंका तिवारी
सहायक प्राध्यापक
विप्र कला, वाणिज्य एवं शारीरिक शिक्षा महाविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़)

प्रस्तावना

सांस्कृतिक गतिविधियाँ छात्रों के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ये छात्रों को स्थानीय और वैश्विक परंपराओं से जोड़ने, सांस्कृतिक जागरूकता बढ़ाने तथा रचनात्मकता को प्रोत्साहित करने में सहायक होती हैं। पारंपरिक नृत्य प्रदर्शन और विद्यालय की कला प्रदर्शनियाँ छात्रों की सीखने की प्रक्रिया में रुचि उत्पन्न करती हैं तथा शिक्षा को केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित न रखकर उसे व्यावहारिक एवं अनुभवात्मक बनाती हैं। विद्यालय के नेतृत्वकर्ता, शिक्षक एवं अभिभावक छात्रों के लिए सांस्कृतिक गतिविधियों के महत्व को पहचानकर अधिगम प्रक्रिया को अधिक रोचक और प्रभावी बनाते हैं। इससे विद्यार्थियों को एक विविधतापूर्ण एवं बहुआयामी विश्व के लिए तैयार होने में सहायता मिलती है।

अधिकांश विद्यालय छात्रों को अपने खाली समय में मनोरंजनात्मक गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करते हैं तथा विभिन्न स्तरों के विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु खेलकूद के अनेक अवसर उपलब्ध कराते हैं। विद्यालय उन विद्यार्थियों को भी अन्य शारीरिक एवं मनोरंजनात्मक गतिविधियों में सम्मिलित होने के लिए प्रेरित करते हैं, जिनकी खेलों में विशेष रुचि नहीं होती। खेल एक आनंददायक, गतिशील एवं शिक्षाप्रद गतिविधि है। सभी शैक्षणिक संस्थानों में खेलों का विशेष महत्व है, क्योंकि यह शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक होता है। माध्यमिक एवं अन्य शैक्षणिक संस्थानों में खेलकूद के योगदान को कम करके नहीं आँका जा सकता।

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में अवसरों की असमानता

ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सांस्कृतिक गतिविधियों एवं खेलकूद के अवसरों की असमानता स्पष्ट रूप से देखी जाती है। भारत में शोध का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र सदैव ग्रामीण और शहरी परिवेश की तुलनात्मक समझ रहा है। समाज में विभिन्न प्रकार की असमानताएँ विद्यमान रही हैं। यद्यपि शहरीकरण तीव्र गति से बढ़ रहा है, फिर भी आज भारत की लगभग 65 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में उपलब्ध आधारभूत संरचनाओं तथा नागरिक सुविधाओं के स्तर में पर्याप्त अंतर पाया जाता है। इसी प्रकार ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक विद्यालयों में भी संसाधनों और अवसरों की असमानता लंबे समय से एक महत्वपूर्ण विषय रही है।

अवसरों में यह अंतर जन्म स्थान, जाति, धर्म, लिंग तथा अन्य सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों के कारण उत्पन्न हो सकता है। विकास का लाभ सभी को समान रूप से प्राप्त होना चाहिए, चाहे वे किसी भी जाति, धर्म, लिंग, गाँव या शहर से संबंधित हों।

सांस्कृतिक गतिविधियाँ

सांस्कृतिक गतिविधियाँ ऐसे कार्यक्रम एवं अभिव्यक्तियाँ हैं जो किसी समुदाय की परंपराओं, मान्यताओं और मूल्यों को प्रदर्शित करती हैं। UNESCO के अनुसार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों का वह स्वरूप हैं जिनका उद्देश्य सांस्कृतिक विरासत, पहचान और

सामाजिक समावेशन को प्रोत्साहित करना होता है, चाहे उनका कोई व्यावसायिक मूल्य हो या नहीं। विद्यालयों में आयोजित उत्सव, प्रतिभा प्रदर्शन (Talent Show), कार्यशालाएँ तथा सांस्कृतिक समारोह विद्यार्थियों में सांस्कृतिक चेतना एवं सामाजिक समरसता को बढ़ावा देते हैं।

सांस्कृतिक गतिविधियों एवं खेलकूद की भूमिका

विद्यार्थियों के लिए सांस्कृतिक गतिविधियाँ रचनात्मकता, आत्मविश्वास एवं सांस्कृतिक जागरूकता को विकसित करती हैं। विद्यालय अपने परिसर में ही विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियों की व्यवस्था कर सकते हैं, जिनमें नृत्य, कला प्रदर्शनियाँ, नाट्य प्रस्तुतियाँ तथा सांस्कृतिक भ्रमण शामिल हो सकते हैं। एक सुव्यवस्थित विद्यालयी सांस्कृतिक कार्यक्रम इन गतिविधियों को विद्यार्थियों के लिए अधिक आकर्षक, उपयोगी और सार्थक बना सकता है।

सांस्कृतिक गतिविधियाँ विद्यार्थियों को विद्यालय की परंपराओं, उत्सवों और सामाजिक मूल्यों से जोड़ने का प्रभावी माध्यम हैं। साथ ही, वे विद्यार्थियों को वैश्विक परिवेश के लिए तैयार करने में भी सहायक होती हैं। सांस्कृतिक कार्यक्रम समग्र शिक्षा (Holistic Education) का एक महत्वपूर्ण अंग हैं। इनके माध्यम से विद्यार्थी नई परंपराओं को समझते हैं, नवीन कौशल विकसित करते हैं तथा अपने समुदाय से गहरा जुड़ाव स्थापित करते हैं।

इसी प्रकार खेलकूद विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है। खेलों के माध्यम से विद्यार्थियों में अनुशासन, नेतृत्व क्षमता, सहयोग, प्रतिस्पर्धात्मक भावना तथा निर्णय लेने की क्षमता का विकास होता है। सांस्कृतिक गतिविधियों और खेलकूद में सक्रिय भागीदारी विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धियों, व्यक्तित्व विकास तथा सामाजिक समायोजन को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। विद्यालयों में आयोजित सांस्कृतिक एवं खेल कार्यक्रम रचनात्मकता, जागरूकता, सामाजिक सहभागिता तथा सामुदायिक भावना को प्रोत्साहित करते हैं, जिससे विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास संभव हो पाता है।

साहित्य का अध्ययन

- **मीर मुदासिर अहमद एवं वानी मंजूर अहमद (2024)-** "खाइयों को पाटना: कश्मीर के ग्रामीण और शहरी सरकारी हाई स्कूलों के बीच खेल-कूद में भागीदारी की असमानताओं का विश्लेषण" **शीर्षक अध्ययन में कश्मीर के ग्रामीण एवं शहरी सरकारी उच्च विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य खेलों में भागीदारी तथा खेल-सुविधाओं की उपलब्धता का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि शहरी विद्यालयों की अपेक्षा ग्रामीण विद्यालयों के विद्यार्थियों की खेल गतिविधियों में भागीदारी अधिक थी। इसका प्रमुख कारण ग्रामीण विद्यार्थियों की खेलों में अधिक रुचि, सक्रिय जीवनशैली तथा अपेक्षाकृत अधिक अवकाश समय होना पाया गया।**
- **थाडियस याम्बेडोन आईडी, बर्नाडेटा सुहार्तिनी आईडी, कैरोलस वासा आईडी एवं सुजावोरो सुजावोरो (2025)-** "शहरी और ग्रामीण विद्यालयों में छात्र खेल संस्कृति: पापुआ में एक तुलनात्मक अध्ययन" **का उद्देश्य पापुआ के ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में विद्यार्थियों की खेल संस्कृति में विद्यमान अंतर का विश्लेषण करना था। अध्ययन में शारीरिक शिक्षा के प्रति सांस्कृतिक धारणाओं, सहभागिता दर तथा पाठ्यक्रम क्रियान्वयन पर विशेष ध्यान दिया गया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि शहरी विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की शारीरिक शिक्षा के प्रति अधिक सकारात्मक धारणा थी, जिनका औसत स्कोर क्रमशः 4.2 एवं 4.5 था, जबकि ग्रामीण विद्यालयों में यह स्कोर 3.5 एवं 3.8 पाया गया। दैनिक सहभागिता दर शहरी विद्यार्थियों (40%) में ग्रामीण विद्यार्थियों (20%) की अपेक्षा अधिक थी। शहरी विद्यार्थी मुख्यतः स्वास्थ्य लाभों (50%) से प्रेरित थे, जबकि ग्रामीण विद्यार्थी मनोरंजन एवं सामाजिक सहभागिता (40%) को अधिक महत्व देते थे।**
- **कॉन्स्टेंटिनोस पैपजॉर्जियस, नागियोटिस डारोस एवं कॉन्स्टेंटिनोस मिलियोरिस (2025)-** "समकालीन समाज की सांस्कृतिक गतिविधियों में भागीदारी और प्राथमिकताएँ" **शीर्षक अध्ययन का उद्देश्य आधुनिक समाज में सांस्कृतिक सहभागिता के स्वरूपों**

तथा उनसे संबंधित प्राथमिकताओं का विश्लेषण करना था। अध्ययन में उन विभिन्न कारकों का परीक्षण किया गया जो सांस्कृतिक गतिविधियों में सहभागिता को प्रभावित करते हैं। निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि सांस्कृतिक प्रचार-प्रसार में डिजिटल रणनीतियों की महत्वपूर्ण भूमिका है। अध्ययन ने सांस्कृतिक संस्थानों के लिए लक्षित एवं समावेशी दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया, जिससे व्यापक सामाजिक सहभागिता सुनिश्चित की जा सके।

- **शिनलिंग तुओ (2024)-** "ग्रामीण बच्चों के खेल और सांस्कृतिक जीवन में बदलाव: ग्रामीण सुधार के परिप्रेक्ष्य में" **शीर्षक अध्ययन में ग्रामीण पुनरुत्थान की पृष्ठभूमि में ग्रामीण बच्चों के खेल एवं सांस्कृतिक जीवन में आए परिवर्तनों का विश्लेषण किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि ग्रामीण क्षेत्रों में खेलों के विकास में उल्लेखनीय प्रगति हुई है, किन्तु अभी भी अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं। इनमें खेल मैदानों एवं सुविधाओं का अभाव, प्रशिक्षित खेल शिक्षकों की कमी तथा खेल एवं शिक्षा के समुचित एकीकरण का अभाव प्रमुख हैं।**

समस्या का कथन

किसी भी शोध समस्या का चयन उसकी प्रासंगिकता, उपयोगिता तथा व्यापक सामाजिक महत्व को ध्यान में रखकर किया जाता है। किसी भी व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए उसके व्यक्तित्व, व्यवहार तथा सामाजिक सहभागिता को समझना अत्यंत आवश्यक है। सांस्कृतिक गतिविधियाँ एवं खेलकूद विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा भावनात्मक विकास में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करते हैं। इन गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता, सहयोग की भावना, अनुशासन तथा सांस्कृतिक चेतना का विकास होता है।

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में उपलब्ध संसाधनों, अवसरों तथा सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश में अंतर होने के कारण विद्यार्थियों की सांस्कृतिक गतिविधियों एवं खेलकूद में सहभागिता के स्तर में भी भिन्नता देखी जाती है। इसी संदर्भ में प्रस्तुत शोध में ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के बीच सांस्कृतिक गतिविधियों एवं खेलकूद की अनिवार्यता तथा उनके प्रभाव का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

शोध समस्या

"ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सांस्कृतिक गतिविधियों एवं खेलकूद की अनिवार्यता पर एक अध्ययन"।

समस्या के चर (Variables of the Study)

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित चरों का चयन किया गया है—

स्वतंत्र चर (Independent Variables)

- ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र
- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी

आश्रित चर (Dependent Variables)

- सांस्कृतिक गतिविधियाँ
- खेलकूद की अनिवार्यता

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं—

1. ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सांस्कृतिक गतिविधियों के प्रति रुचि का अध्ययन करना।
2. ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के खेलकूद की अनिवार्यता के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं में खेलकूद तथा सांस्कृतिक गतिविधियों के उनके स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नलिखित परिकल्पनाएँ निर्धारित की गई हैं—

1. ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मध्य सांस्कृतिक गतिविधियों की अनिवार्यता के संबंध में सार्थक /अंतर पाया जाएगा।
2. ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मध्य खेलकूद की अनिवार्यता के संबंध में सार्थक अंतर पाया जाएगा।
3. माध्यमिक स्तर के बालक एवं बालिकाओं के स्वास्थ्य पर खेलकूद तथा सांस्कृतिक गतिविधियों के प्रभाव में सार्थक अंतर पाया जाएगा।

शोध अध्ययन की विधि

प्रस्तुत शोध कार्य के उद्देश्यों की प्राप्ति तथा तथ्यों के व्यवस्थित संकलन हेतु मुख्य रूप से **वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि (Descriptive Survey Method)** का प्रयोग किया गया है। यह विधि ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सांस्कृतिक गतिविधियों तथा खेलकूद की अनिवार्यता के प्रति दृष्टिकोण एवं उनके प्रभावों की वर्तमान स्थिति का वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन करने के लिए उपयुक्त मानी जाती है।

अध्ययन के अंतर्गत आवश्यक आँकड़ों के संकलन हेतु **स्वनिर्मित प्रश्नावली** को प्राथमिक उपकरण के रूप में उपयोग किया गया। प्रश्नावली के माध्यम से विद्यार्थियों से प्रत्यक्ष रूप से जानकारी प्राप्त की गई, जिससे उनके अनुभवों, विचारों तथा व्यवहारगत प्रवृत्तियों का यथार्थ चित्र सामने आ सका।

यह संपूर्ण शोध प्रक्रिया वैज्ञानिक, वस्तुनिष्ठ तथा प्रमाण-आधारित दृष्टिकोण पर आधारित है, जिसमें विद्यार्थियों की वास्तविक परिस्थितियों एवं अनुभवों को ध्यान में रखते हुए डेटा का संकलन एवं विश्लेषण किया गया है। इससे अध्ययन के निष्कर्षों की विश्वसनीयता एवं प्रामाणिकता में वृद्धि हुई है।

8. परिकल्पनाओं एवं निष्कर्षों का सत्यापन

प्रस्तुत अध्ययन में **"ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सांस्कृतिक गतिविधियों एवं खेलकूद की अनिवार्यता पर एक अध्ययन"** किया गया। परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु काई-स्क्वायर (Chi-Square) परीक्षण का उपयोग किया गया। अध्ययन में यह मानदंड अपनाया गया कि यदि प्राप्त **p-value 0.05 से कम** होती है, तो परिकल्पना स्वीकार की जाती है तथा यदि **p-value 0.05 से अधिक** होती है, तो परिकल्पना अस्वीकार मानी जाती है।

परिकल्पना – 1

"ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मध्य सांस्कृतिक गतिविधियों की अनिवार्यता के संबंध में सार्थक अंतर पाया जाएगा।"

इस परिकल्पना के परीक्षण हेतु सांस्कृतिक गतिविधियों की अनिवार्यता से संबंधित विभिन्न प्रश्नों (Q1 से Q5) पर विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं का काई-स्क्वायर परीक्षण किया गया। परीक्षण में प्राप्त p-value क्रमशः **0.135, 0.839, 0.422, 0.540 तथा 0.908** प्राप्त हुई, जो सभी **0.05 से अधिक** हैं। इससे स्पष्ट होता है कि सांस्कृतिक गतिविधियों की अनिवार्यता के संबंध में ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं में सांख्यिकीय दृष्टि से कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

अतः परिकल्पना–1 अस्वीकार की जाती है।

परिकल्पना – 2

"ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मध्य खेलकूद की अनिवार्यता के संबंध में सार्थक अंतर पाया जाएगा।"

खेलकूद की अनिवार्यता एवं उसके महत्व से संबंधित प्रश्नों (Q6 से Q8) के आधार पर काई-स्क्वायर परीक्षण किया गया। परीक्षण में प्राप्त p-value क्रमशः **0.908, 0.906 तथा अन्य सभी मान 0.05 से अधिक** पाए गए। इससे यह स्पष्ट होता है कि खेलकूद की अनिवार्यता के प्रति ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के दृष्टिकोण में कोई सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर नहीं है।

अतः परिकल्पना–2 अस्वीकार की जाती है।

परिकल्पना – 3

"माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं में खेलकूद तथा सांस्कृतिक गतिविधियों के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव के संबंध में सार्थक अंतर पाया जाएगा।"

खेलकूद एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के प्रभाव से संबंधित प्रश्नों के विश्लेषण में प्राप्त काई-स्क्वायर परीक्षणों के p-value **0.05 से अधिक** पाए गए। परिणामस्वरूप छात्र एवं छात्राओं की प्रतिक्रियाओं में सांख्यिकीय दृष्टि से कोई महत्वपूर्ण अथवा सार्थक अंतर परिलक्षित नहीं हुआ। इससे यह स्पष्ट होता है कि दोनों वर्गों के विद्यार्थी खेलकूद एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के स्वास्थ्य, व्यक्तित्व विकास तथा समग्र विकास पर पड़ने वाले प्रभाव के प्रति लगभग समान दृष्टिकोण रखते हैं।

अतः परिकल्पना–3 अस्वीकार की जाती है।

अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मध्य सांस्कृतिक गतिविधियों तथा खेलकूद की अनिवार्यता के प्रति दृष्टिकोण में कोई सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर नहीं पाया गया। इसी प्रकार छात्र एवं छात्राओं के मध्य भी खेलकूद एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के स्वास्थ्य एवं व्यक्तित्व विकास पर पड़ने वाले प्रभावों के संबंध में दृष्टिकोण लगभग समान पाया गया। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि वर्तमान समय में सांस्कृतिक गतिविधियों एवं खेलकूद के महत्व के प्रति विद्यार्थियों में व्यापक जागरूकता विद्यमान है तथा वे इन गतिविधियों को अपने सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक मानते हैं।

परिणाम

प्रस्तुत शोध अध्ययन के प्रमुख परिणाम निम्नलिखित हैं—

1. **ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं में सांस्कृतिक गतिविधियों की अनिवार्यता के संबंध में कोई सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर नहीं पाया गया।** इससे स्पष्ट होता है कि दोनों समूह सांस्कृतिक गतिविधियों के महत्व को समान रूप से स्वीकार करते हैं। अतः **परिकल्पना–1 अस्वीकार** की जाती है।
2. **खेलकूद की अनिवार्यता के प्रति ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों के दृष्टिकोण में समानता पाई गई।** दोनों समूहों के विद्यार्थियों ने खेलकूद को शिक्षा एवं व्यक्तित्व विकास का महत्वपूर्ण अंग माना। अतः **परिकल्पना–2 अस्वीकार** की जाती है।
3. **माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राएँ दोनों ही खेलकूद तथा सांस्कृतिक गतिविधियों के स्वास्थ्य, आत्मविश्वास एवं व्यक्तित्व विकास पर पड़ने वाले सकारात्मक प्रभावों के प्रति समान दृष्टिकोण रखते हैं।** उनके विचारों में कोई सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः **परिकल्पना–3 अस्वीकार** की जाती है।

निष्कर्ष

अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि ग्रामीण एवं शहरी परिवेश के विद्यार्थियों के मध्य सांस्कृतिक गतिविधियों तथा खेलकूद की अनिवार्यता के प्रति दृष्टिकोण में कोई उल्लेखनीय अंतर नहीं है। वर्तमान समय में दोनों वर्गों के विद्यार्थी इन गतिविधियों को शिक्षा के अभिन्न अंग के रूप में स्वीकार करते हैं तथा इन्हें शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं व्यक्तित्व विकास के लिए आवश्यक मानते हैं। इसलिए विद्यालयी शिक्षा में सांस्कृतिक गतिविधियों एवं खेलकूद को समान रूप से प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. शुक्ला, डी. पी. (2004). *रिसर्च मेथोडोलॉजी*। जयपुर: कॉलेज बुक डिपो।
2. गोयल, विष्णु. (2017). *सूचना प्रौद्योगिकी की अवधारणा–II*। अजमेर: माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान।
3. जोहरी, शशांक एवं सुरंजना, जे. (2010). *कंप्यूटर कोर्स*। दिल्ली: मनोज पब्लिकेशन।
4. भार्गव, नीरज. (2012). *सूचना प्रौद्योगिकी का आधार–II*। अजमेर: माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान।
5. राय, पारसनाथ. (2007). *अनुसंधान परिचय*। आगरा: लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशन।
6. सरीन, शशिकला एवं सरीन, अंजनी. (2007). *शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ*। आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर।
7. श्रीवास्तव, डी. एन. (2006). *अनुसंधान विधियाँ* आगरा: साहित्य प्रकाशन।
8. शर्मा, आर. ए. (2006). *शिक्षा अनुसंधान*। मेरठ: आर. लाल बुक डिपो।
9. सिंह, अरुण कुमार. (2010). *मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ* दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन।
10. शर्मा, रविन्द्र. (2013). *इंटरनेट टेक्नोलॉजी और वेब डिज़ाइन*। जयपुर: राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी।